Self Respect

June 05,2014

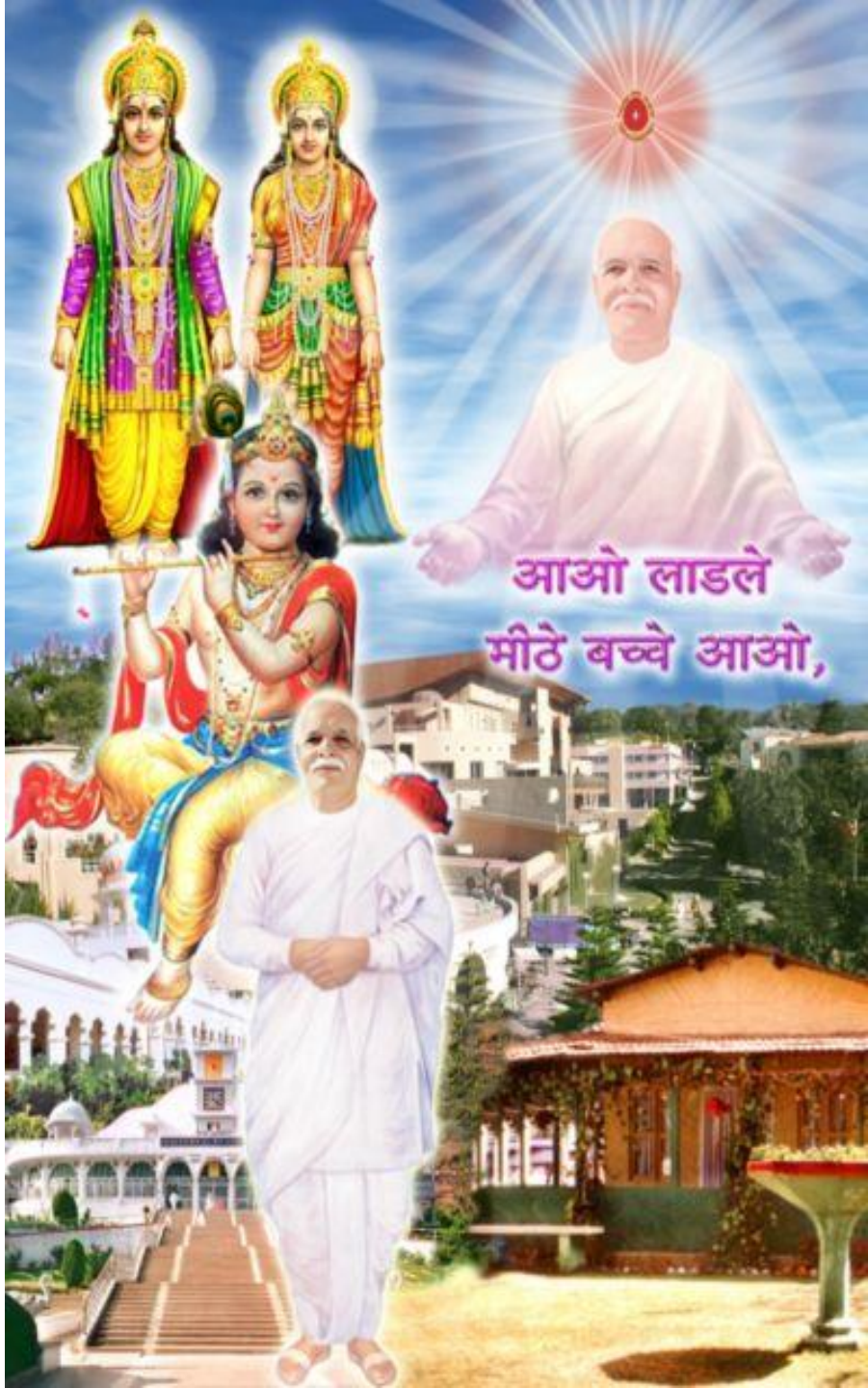

✓तुम बच्चों को अब बाप बैठ समझाते हैं, बाप को ही सब याद करते हैं | ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जिसके मुख में भगवान् न हो | अब भगवान् को कहा जाता है निराकार | निराकार का भी अर्थ नहीं समझते हैं| अभी तुम सब कुछ जान जाते हो | पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बन जाते हो |

✓तुम अभी ब्राह्मण बने हो, देवता बनने के लिए पहले ब्राह्मण जरूर बनना पड़े |

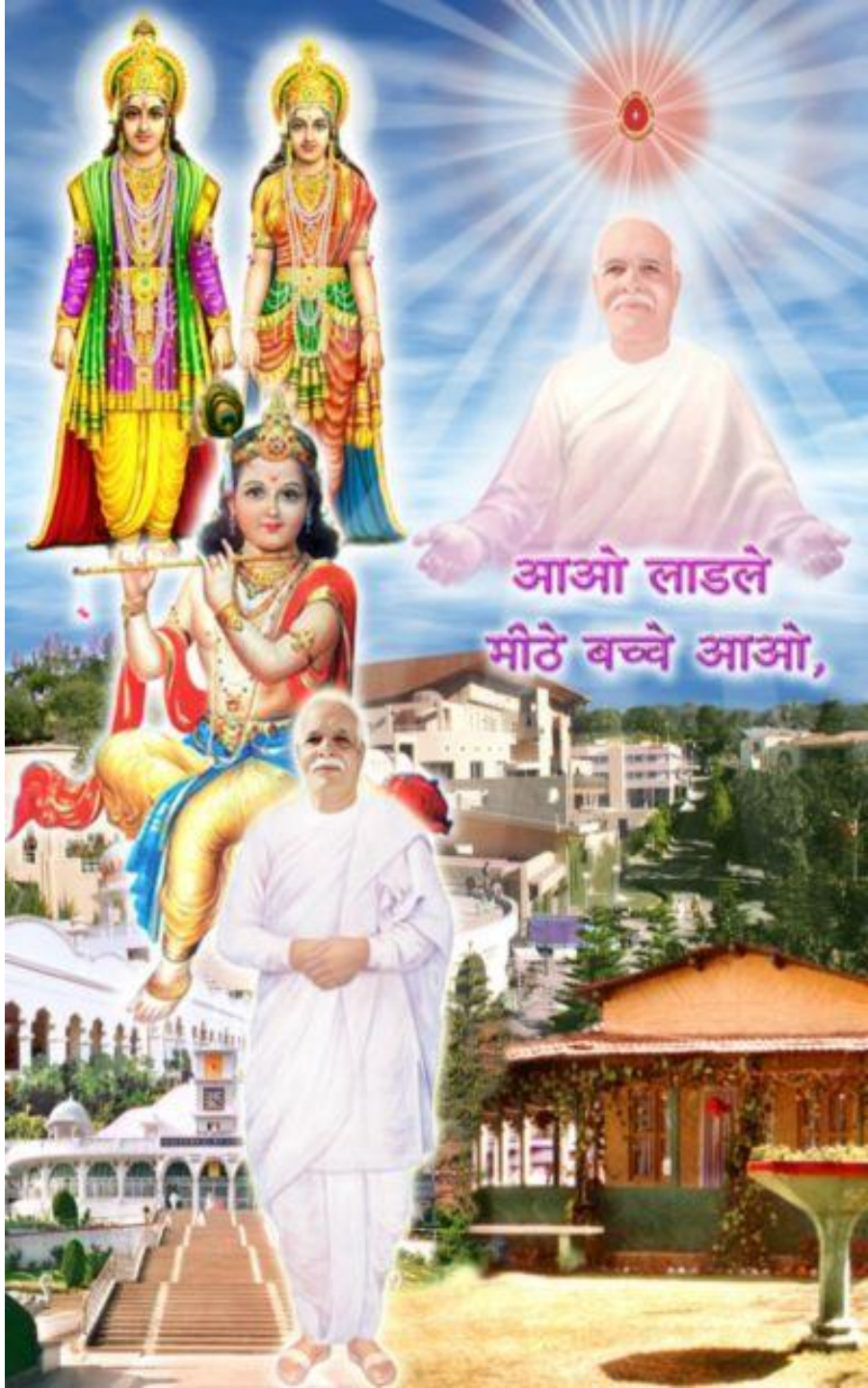

✓नम्बरवन है सूर्यवंशीशी | राम को सूर्यवंशी नहीं कहेंगे | अभी तुम आये हो सूर्यवंशी बनने के लिए, न कि चन्द्रवंशी बनने के लिए | यह राजयोग है ना | तुम्हारी बुद्धि में है हम यह लक्ष्मी-नारायण बनेंगे | दिल में खुशी रहती है - बाबा हमको पढ़ाते हैं, महाराजा-महारानी बनाने | सत्य नारायण की सच्ची-सच्ची कथा यह है | आगे जन्म-जन्मान्तर तुम सत्य नारायण की कथा सुनते हो | परन्तु वह कोई सच्ची कथायें नहीं हैं | भक्ति मार्ग में कभी मनुष्य से देवता बन नहीं सकते | मुक्ति-जीवनमुक्ति को पा नहीं सकते | सभी मनुष्य मुक्ति-जीवनमुक्ति पाते जरूर हैं |

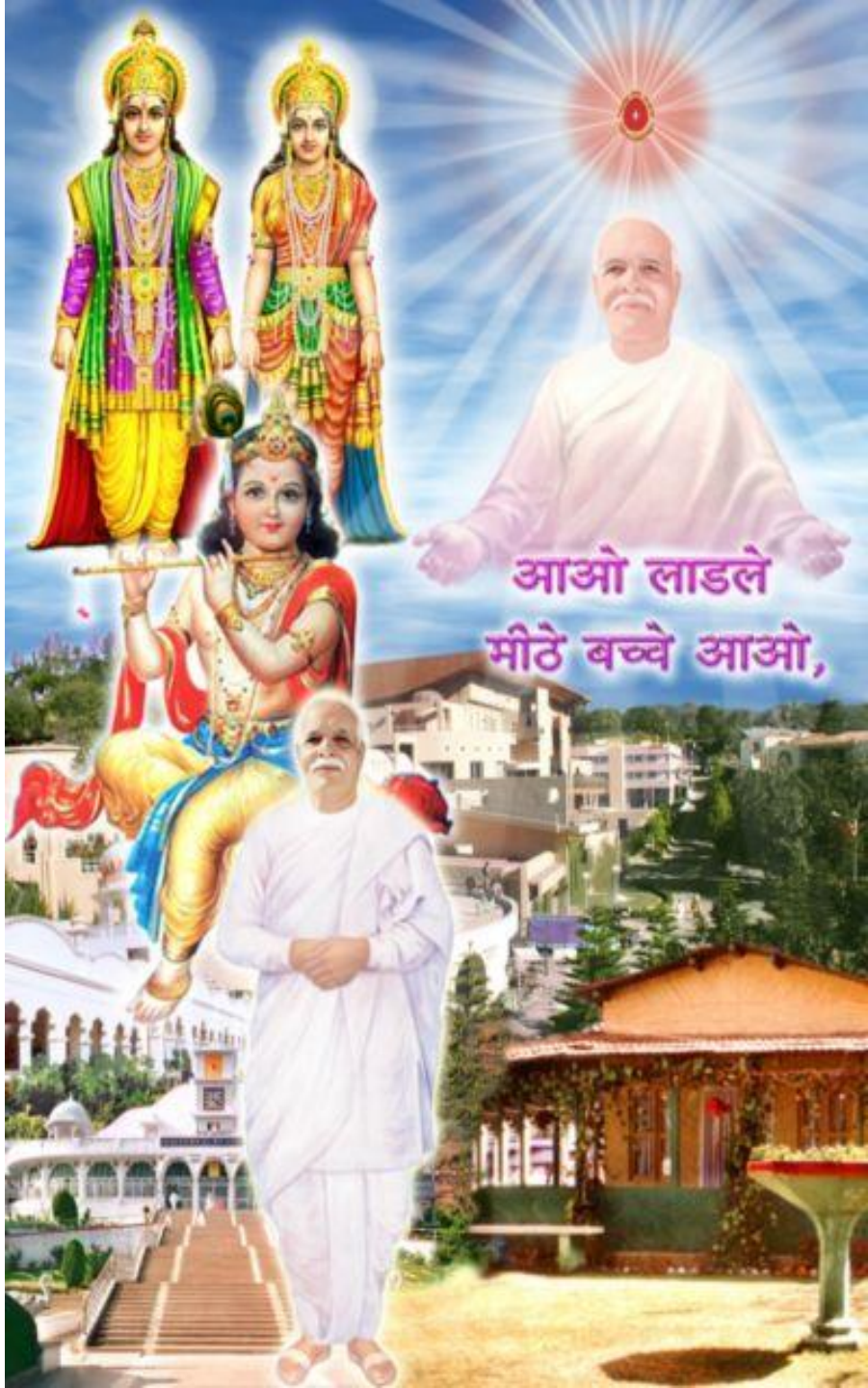

✓यह खेल बना हुआ है | इस बेहद के खेल के हम सभी एक्टर्स हैं, यहाँ आते हैं पार्ट बजाने | हम आत्मायें यहाँ के निवासी नहीं हैं | कैसे आते हैं-यह सब बातें समझाई जाती हैं | कई आत्मायें यहाँ ही पुनर्जन्म लेती रहती हैं | तुम बच्चों को शुरू से लेकर अन्त तक सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी बुद्धि में है |

✓अब बाप ने तुमको रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का राज समझाया है | तुम गरीब, साधारण सब कुछ जानते हो | तुम हो स्वच्छ बुद्धि | स्वच्छ पवित्र को कहा जाता है | तुच्छ बुद्धि अपवित्र ठहरे | तुम अभी देखो क्या बन रहे हो! स्कूल में भी पढ़ाई से ऊंच पद पा सकते हैं | तुम्हारी पढाई है ऊंच ते ऊंच, जिससे तुम राजाई पद पाते हो |

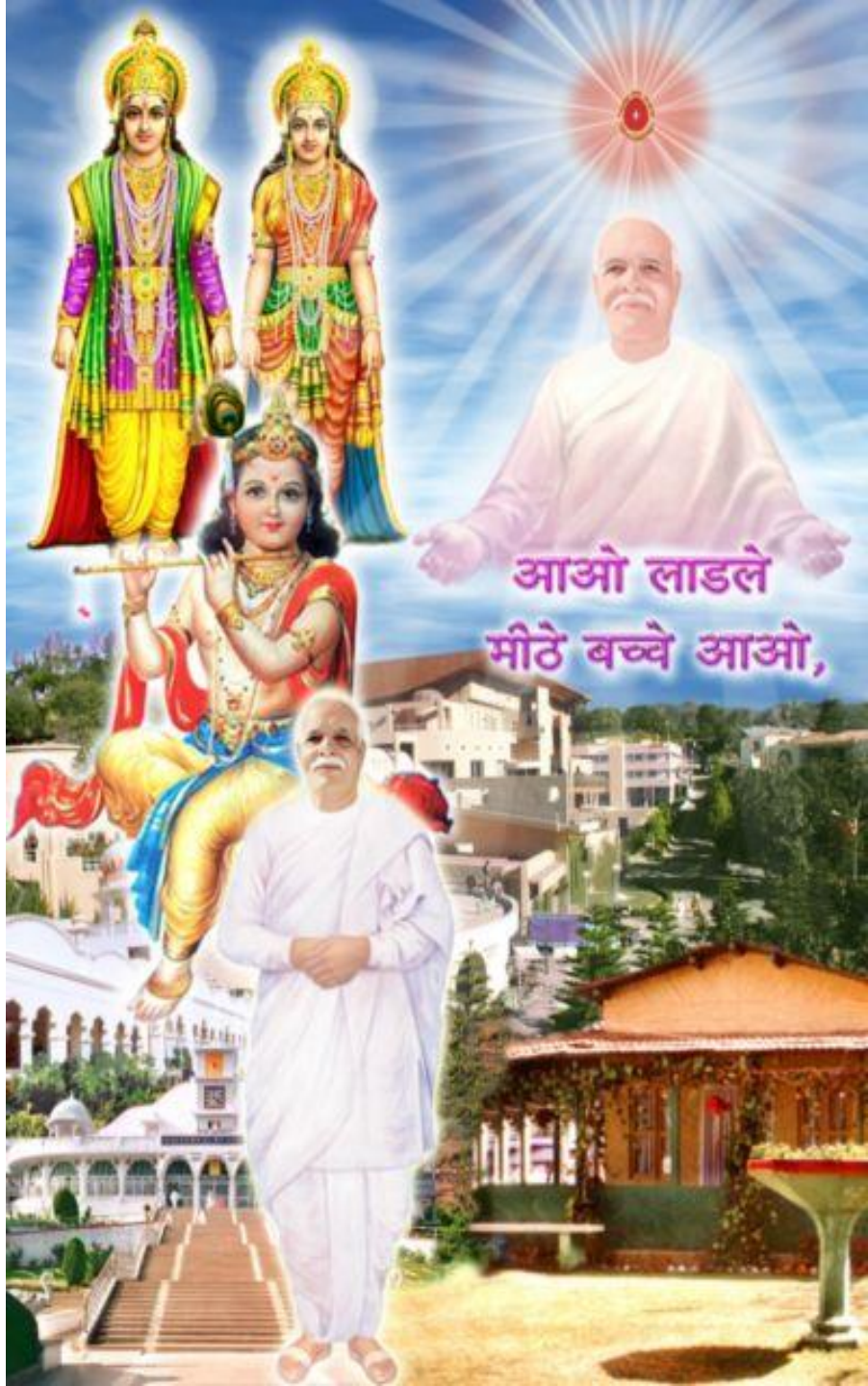

- ✓तुम इस पढाई से राजा बनते हो | बाप ही कहते हैं मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखलाता हूँ |
- ✓आत्मा समझ निराकार बाप को याद करो तो तुम पवित्र बन जायेंगे और चक्र को जानने से चक्रवर्ती राजा सतयुग में बन जायेंगे |
- ✓तो अब तुम बच्चों की बुद्धि में सारा सृष्टि चक्र फिरता रहता है, तब बाप कहते हैं तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो |
- ✓तुम मीठे-मीठे बच्चों को अथाह खुशी होती है | अभी तुम समझते हो-हम आत्मा हैं | पहले तुम अपने को आत्मा भी भूल गये तो घर भी भूल गये |

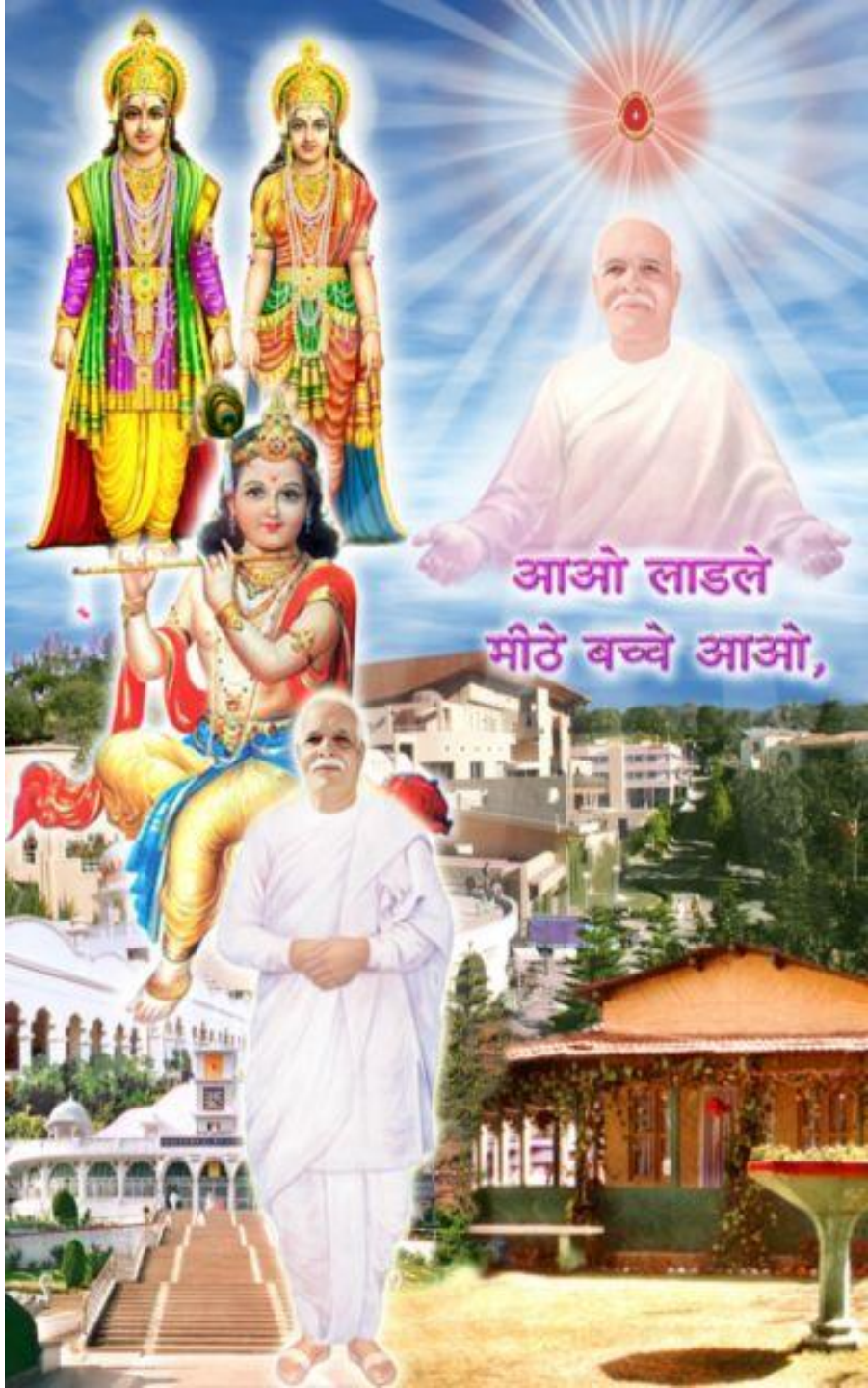

✓सतसंगो मैं मनुष्य कितना भटकते हैं | आमदनी कुछ भी नहीं होती, और ही घाटा, इसलिए उसको भटकना कहा जाता है | भटकते-भटकते धन-दौलत आदि सब गवाए कंगाल बन पड़े हैं | अब इस पढ़ाई में जो जितना-जितना अच्छी तरह धारण करेंगे और करायेंगे, फायदा ही फायदा है | ब्राह्मण बन गया तो फायदा ही फायदा | तुम जानते हो हम ब्राह्मण ही स्वर्गवासी बनते हैं | स्वर्गवासी तो सब बनेंगे | परन्तु तुम उसमें ऊंच पद पाने का पुरूषार्थ करते हो | अभी तुम सबकी वानप्रस्थ अवस्था है |

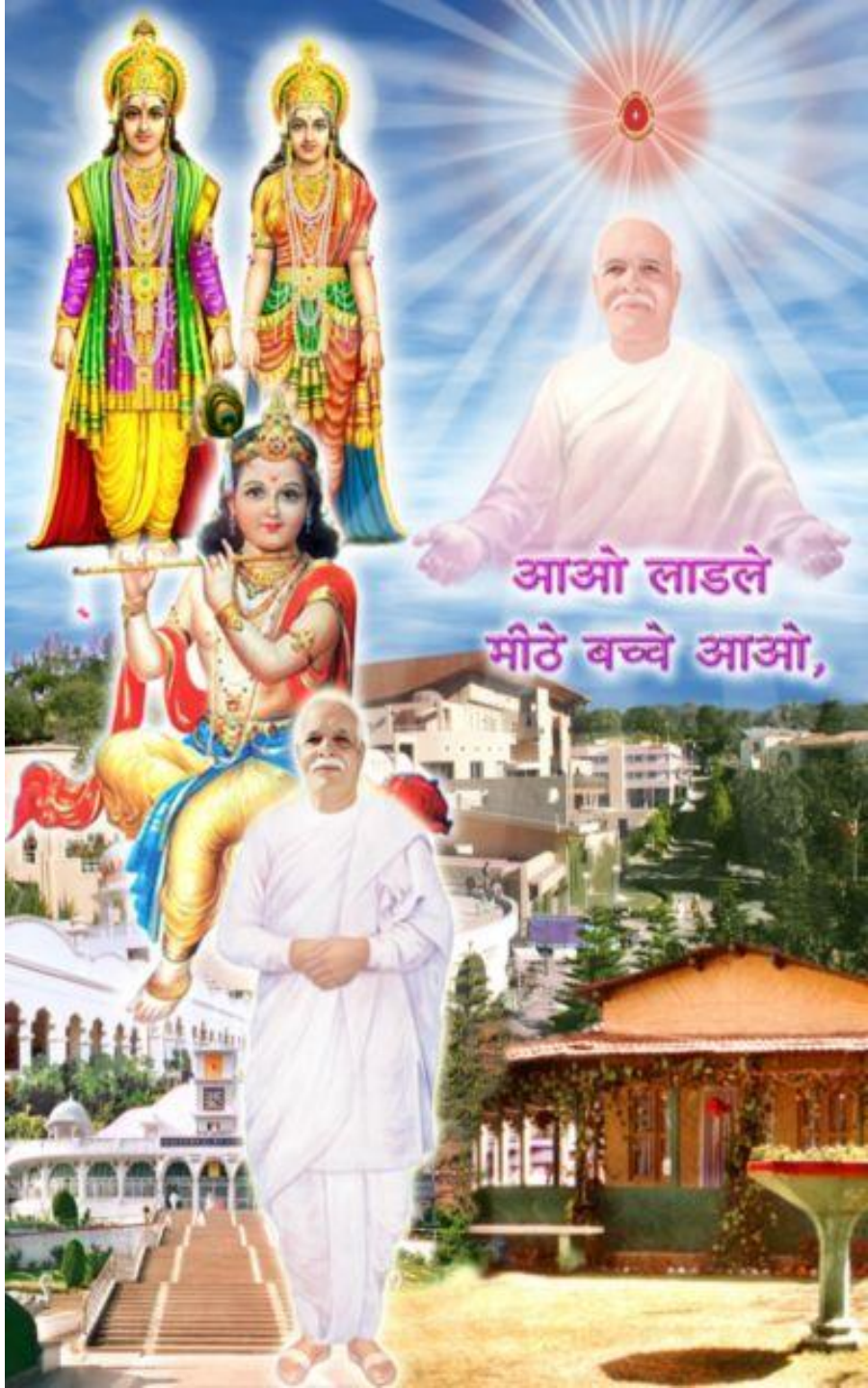

✓अटेंशन और चेकिंग द्वारा स्व सेवा करने वाले सम्पन्न और सम्पूर्ण भव !

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात- पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |